

भारत सरकार
परमाणु ऊर्जा विभाग
राज्य सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या 2058

जिसका उत्तर दिनांक 11.07.2019 को दिया जाना है

स्वर्णरेखा नदी में रेडियोधर्मी पदार्थ

2058. श्री प्रसन्न आचार्य :

क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) क्या यह सच है कि ओडिशा और झारखंड में स्वर्णरेखा नदी में रेडियोधर्मी पदार्थ के निशान मिले हैं, जो नदी के किनारे रहने वाले क्षेत्रीय लोगों के जीवन को प्रभावित कर सकते हैं और यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है ; और
- (ख) क्या विभाग देश में तापीय परमाणु ऊर्जा परियोजनाओं के कारण हो रहे प्रदूषण से बागवानी और मत्स्य पालन को संरक्षा प्रदान करने के लिए कोई सुरक्षोपाय करने का विचार रखता है और यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर

राज्य मंत्री, कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन तथा प्रधान मंत्री कार्यालय (डॉ. जितेन्द्र सिंह):

- (क) जी, नहीं । स्वर्णरेखा नदी के पानी और तलछट नमूनों में रेडियोसक्रियता के स्तरों के संबंध में पर्यावरण सर्वेक्षण प्रयोगशाला (ईएसएल), भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र (बीएआरसी) द्वारा किया गया विस्तृत सर्वेक्षण स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि नदी के पारितंत्र में रेडियोसक्रियता, पृष्ठभूमिक स्तरों से अधिक नहीं बढ़ी है । प्राकृतिक रूप से विद्यमान रेडियोसक्रियता, नदी के तटों पर रहने वाले स्थानीय लोगों के जीवन को प्रभावित नहीं करती । बीएआरसी द्वारा स्थापित स्वतंत्र पर्यावरण सर्वेक्षण प्रयोगशाला द्वारा प्रतिवेशी पर्यावरणीय मेटराइसों का आवधिक मॉनीटरन किया जाता है और उसके परिणाम, परमाणु ऊर्जा नियामक परिषद (एईआरबी) को प्रस्तुत किए जाते हैं । पर्यावरणीय मॉनीटरन की रिपोर्टों की समीक्षा एईआरबी द्वारा की जाती है ताकि यूरेनियम कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (यूसीआईएल) के प्रचालन पर और स्वर्णरेखा नदी सहित, पर्यावरण में बहिःस्राव निस्सरण के प्रभाव का मूल्यांकन किया जा सके । एईआरबी के पास उपलब्ध नवीनतम रिकार्ड के अनुसार, स्वर्णरेखा नदी में रेडियोसक्रियता का स्तर, अर्थात् औसत यूरेनियम तथा रेडियम स्तर, विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) /एईआरबी द्वारा निर्धारित, पेय जल अनुमेय सीमा का केवल 1.5% - 2% है और प्राकृतिक पृष्ठभूमिक स्तरों से तुलनीय है ।

(ख) नाभिकीय ऊर्जा स्वच्छ और पर्यावरण-अनुकूल है तथा इससे ग्रीन हाउस गैसों और प्रदूषक उत्सर्जित नहीं होते। इससे, आस-पास के क्षेत्रों की कृषि और बागवानी पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता। इसका सबूत यह है कि मौजूदा नाभिकीय विद्युत संयंत्रों के आस-पास और संयंत्र परिसर में फसलें और फलों के पेड़ प्रचुर मात्रा में हैं। जहाँ तक मत्स्यन का संबंध है, संघननकारक भाप के लिए शीतलन जल प्रणाली इस प्रकार डिज़ाइन की गई है कि जल क्षेत्र (समुद्र, झील इत्यादि) के परिवेश तापमान में होने वाली वृद्धि पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (एमओईएफएंडसीसी) द्वारा निर्धारित सीमा के अंदर ही होती है और उससे समुद्री जीवन प्रभावित नहीं होता। मौजूदा नाभिकीय विद्युत संयंत्रों के आस-पास मछलियों का बड़ी मात्रा में पकड़ा जाना इस तथ्य का सबूत है। पर्यावरणीय क्लिअरेंस प्रक्रिया के भाग के रूप में, एक विस्तृत पर्यावरणीय प्रभाव मूल्यांकन (ईआईए) किया जाता है और पर्यावरणीय क्लिअरेंस में निर्धारित सभी शर्तों का कड़ाई से कार्यान्वयन किया जाता है ताकि यह सुनिश्चित हो कि पर्यावरण पर कोई प्रतिकूल प्रभाव न पड़े। सभी नाभिकीय विद्युत संयंत्र स्थलों (एनपीपी) पर, जनता और पर्यावरण के संरक्षण के रक्षोपाय किए जा चुके हैं जिसमें एमओईएफसीसी और एईआरबी से स्थल मूल्यांकन, डिज़ाइन अनुमोदन, निर्माण और प्रचालन लाइसेंस प्राप्त करना शामिल है। सभी परमाणु ऊर्जा परियोजना स्थलों और नाभिकीय विद्युत संयंत्र स्थलों पर संस्थापित पर्यावरण सर्वेक्षण प्रयोगशालाएं (ईएसएल) नियामक शर्तों का अनुपालन सुनिश्चित करती हैं जिसमें जनता और पर्यावरण की सुरक्षा शामिल है। पर्यावरण सर्वेक्षण प्रयोगशालाएं (ईएसएल) संयंत्र स्थल के आस-पास वायुमंडलीय, स्थलीय और जलीय पर्यावरण के वायु, जल, मृदा, वनस्पति, कृषि उत्पाद, दूध, मांस, मछली तथा अन्य खाद्य उत्पादों जैसे पर्यावरणीय नमूनों पर प्रचालन-पूर्व सर्वेक्षण करती हैं, ताकि स्थल के आस-पास के प्रचालन-पूर्व बेसलाइन रेडियोसक्रियता स्तरों को स्थापित किया जा सके। रिएक्टर की प्रचालन अवधि के दौरान, आस-पास के पर्यावरण और जनता पर संयंत्र प्रचालन से क्या प्रभाव पड़ता है, इसका मूल्यांकन करने के लिए, वायुमंडलीय, स्थलीय और जलीय पर्यावरण नमूनों को आवधिक रूप से इकट्ठा कर, रेडियोसक्रियता का विश्लेषण किया जाता है। पर्यावरण सर्वेक्षण प्रयोगशालाएं, पर्यावरणीय नमूनों में रेडियोक्रियता एवं विकिरण के अति सूक्ष्म स्तर का विश्लेषण करने हेतु उच्च संवेदी उपकरणों तथा पर्याप्त अवसंरचना से सुसज्जित होती हैं। पर्यावरणीय नमूनों में रेडियोसक्रियता के स्तरों की तुलना संबंधित मैट्रिक्स में प्रचालन-पूर्व मान से की जाती है। विभिन्न एनपीपी में नियमित रूप से किए गए अध्ययन स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि पर्यावरण में रेडियोसक्रियता का कोई अस्वीकार्य वर्धन नहीं है। अतः एनपीपी प्रचालन के कारण बागवानी और मत्स्य-उद्योग की रक्षा करने के लिए कोई अतिरिक्त रक्षोपाय की आवश्यकता नहीं है।
